60

''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु''

(19:11-21)

हमारा पिछला पाठ मेमने के विवाह के इर्द-गिर्द था: ''मेमने का ब्याह आ पहुंचा: और उसकी पत्नी ने अपने आपको तैयार कर लिया है'' (19:7); ''धन्य वे हैं, जो मेमने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं'' (19:9)। इसलिए हम मानसिक और भावुक रूप से ''देखो, दूल्हा आता है'' (मत्ती 25:6; KJV) पुकारने और मसीह के चमचमाते हुए विवाह के वस्त्र में प्रकट होने के लिए तैयार होते है। यीशु प्रकट *होता* है, परन्तु जैसा कि प्रकाशिवताक्य में आमतौर पर होता है, वैसे नहीं जैसे हम उम्मीद करते हैं। यह दृश्य पर एकदम से आ जाने वाला दूल्हा नहीं बल्कि एक योद्धा राजा है:

> फिर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा; और देखता हूं कि एक सवार है, जो विश्वास योग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है। उसकी आंखें आग की ज्वाला है: और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं; और उसका एक नाम लिखा है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता। और वह लोहू से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है: और उसका नाम परमेश्वर का वचन है। ... और जाति-जाति को मारने के लिए उसके मुंह से एक चोखी तलावार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिामान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा। और उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है, **राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु** (19:11-16)।

थोड़ी देर हुई जब मैंने आपको याद दिलाया था कि दर्शन का कुल प्रभाव सबसे महत्वपूर्ण है। एक पल के लिए 11 से 21 आयतें पढ़ें। उन आयतों को पढ़ते हुए आपके ध्यान में कौन से शब्द आते हैं? आपका उत्तर जो भी हो यह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ''विजय'' शब्द से ही जड़ा हुआ है। यह वचन *विजय* अर्थात मसीह और मसीहियत के शत्रुओं, विशेषकर पशु और झूठे भविष्यवक्ता (आयतें 19, 20) पर उनके साथियों सहित (आयत 21) विजय है।

मेमने के शत्रुओं का परिचय इस क्रम में दिया गया था: (1) अजगर (12:3), (2) समुद्र का पशु और पृथ्वी का पशु (13:1, 11), और (3) बड़ा बाबुल (14:8; 16:19; 17:1, 5)। हम उन्हें विपरीत क्रम में भेजे जाते देखते हैं: (1) 17 और 18 अध्यायों में बाबुल (2) अध्याय 19 में दोनों पशु (3) अन्त में अध्याय 20 में अजगर।[1] बाबुल का विनाश देख लेने के बाद हम पशुओं का अर्थात अध्याय 12 वाले भयंकर पशुओं का अन्त देखने को तैयार हैं जो अभेद्य लगते थे। पहले यह भविष्यवाणी की गई थी कि पहला पशु "विनाश में पड़ना" था (17:8; 17:11 भी देखें), और इस पाठ में हम देखेंगे कि वह भविष्यवाणी पूरी होती है (19:20)।

इस पाठ के लिए बाइबल में से वचन 19:11-21 है। इस वचन का उद्देश्य दोनों पशुओं की हार को दिखाना है, परन्तु इसमें ज़ोर राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु पर है, जिसने उनका विनाश किया। जैसा कि जेम्स एफर्ड ने लिखा है, "लेखक यहां यह विवरण देने का प्रयास नहीं कर रहा कि न्याय *कैसे* हो बल्कि यह प्रयास कर रहा है कि इसके लिए ज़िम्मेदार *कौन* है।"[2]

उसका अधिकार सम्पूर्ण है (19:11-16)

यूहन्ना ने "फिर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा" कहते हुए आरम्भ किया (आयत 11क)। पहले परमेश्वर को अपने सिंहासन पर दिखाने के लिए स्वर्ग में एक द्वार खोला गया था (4:1, 2), परन्तु इस दर्शन के लिए द्वार के आकार का दृश्य अपर्याप्त था। अब पूरा स्वर्ग खुला हुआ था ताकि यह प्रेरित मसीह को अपनी सामर्थ और महिमा में देख सके।

विलियम बार्कले ने लिखा है, "यहां प्रकाशितवाक्य के सबसे नाटकीय क्षण अर्थात मसीह की आकस्मिक निकलती विजय है।"[3] जी. आर. बिसले-मुर्रे ने कहा, "इस वचन में प्रभु के आने का विवरण प्रकाशितवाक्य में सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली चित्रणों में से एक है।"[4]

स्वर्ग के खुलने पर यूहन्ना ने देखा "कि एक सवार है, जो विश्वास योग्य, और सत्य कहलाता है" (आयत 11ख)। 6:2 वाले श्वेत घोड़े की पहचान पर विवाद हो सकता है,[5] परन्तु अध्याय 19 वाले श्वेत घोड़े के सवार के बारे में कोई विवाद नहीं है। यह विश्वव्यापी तौर पर माना जाता है कि यह यीशु ही था: उसकी शक्ल यीशु जैसी थी (आयतें 12, 15) और नाम यीशु वाले थे (आयतें 11, 13, 16)। (यीशु, जो विश्वास योग्य और सच्चा है, श्वेत घोड़े पर का चित्र देखें।)

इस भाग में दिए गए कई विवरणात्मक शब्द पुस्तक में पहले मिल सकते हैं। अध्याय 6 वाले सवार की तरह यीशु श्वेत घोड़े पर सवार था क्योंकि "श्वेत घोड़ा विजय का प्रतीक है, ... विजय का जश्न मनाने के लिए एक रोमी सेनापति श्वेत घोड़े पर ही सवार होता था।"[6]

पहले यीशु को "विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह" (3:14) कहा गया था।[7] यहां उसे "विश्वासयोग्य और सत्य" कहा गया है (आयत 11ख) क्योंकि वह अपनी भरोसेयोग्ता

और निर्भरता दिखा रहा था: उसने धर्मियों को प्रतिफल देने और दुष्टों को दण्ड देने के लिए वापस आने की प्रतिज्ञा की थी और वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर रहा था।

इस वचन में अगला वाक्य उसके आने के उद्देश्य पर ज़ोर देने के लिए है ''और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है'' (आयत 11ग)। पहली बार वह हमारा उद्धारकर्त्ता बनकर आया था; दूसरी बार वह हमारा न्याया करने वाला बनकर आएगा। पृथ्वी के न्यायियों उलट जो व्यक्तिगत पूर्वधारणा से प्रभावित होते, प्रसिद्ध विचार से गुमराह होते और कई बार लालच का उन पर असर हो जाता है, यीशु ऐसे निर्णय देगा जो सही और सच्चे हैं।

हमें यहां फिर इस प्रश्न पर ध्यान देने के लिए रुकना पड़ेगा कि यहां कौन सी बात ध्यान में है: इस युग के अन्त में द्वितीय आगमन या पहली शताब्दी के मसीही लोगों के शत्रु (अन्य शब्दों में रोमी साम्राज्य) को दण्ड देने के लिए प्रभु का आना। इसमें बहुत कम संदेह लगता है कि प्रकाशितवाक्य के मूल पाठकों को दिया जाने वाला संदेश बाद वाला होगा: (1) जैसा कि पहले कहा गया था, यूहन्ना के समय में दोनों पशु रोमी साम्राज्य (या सम्राट) और सम्राट की पूजा करवाने वाले शक्तियों को दर्शाते थे। (2) मूल पाठकों की तुरन्त चिन्ता रोम का गिरना होनी थी न कि बुराई की अन्तिम हार। (3) वचन में यह सुझाव देते हुए कि यह कार्य बहुत देर बाद आने वाले भविष्य में नहीं बल्कि तुरन्त होना था, वर्तमानकाल (''न्याय'' और ''युद्ध करता'') में है।

परन्तु एक बार फिर तुरन्त ''पहाड़ की चोटी'' अन्तिम ''पहाड़ की चोटी'' से मिल जाती है।[8]

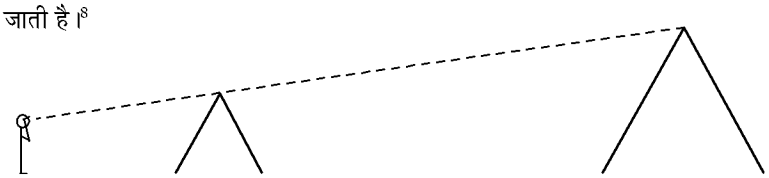

इस पद्य में हो सकता है कि ध्यान में मसीहियत के विशेष शत्रु रहे हों, परन्त हर पीढ़ी के पाठकों के लिए न बदलने वाला सबक यह है कि प्रभु का *कोई भी* शत्रु चाहे वह कितना भी शक्तिशाली हो उसकी शक्ति के सामने टिक नहीं सकेगा। अन्त में, *सब* जो उसका विरोध करते हैं, गिर जाएंगे। फिर तो एक अर्थ में, 19:11-17 द्वितीय आगमन पर 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9 जैसी महान आयतों के समान हैं।

आइए वचन पाठ में चलते हैं: जैसे 1:14 में यीशु की आंखें ''आग की ज्वाला'' (19:12क) के रूप में दिखाई गई थीं।[9] उसके नज़र से कुछ भी छिप नहीं सकता। न्याय करने वाला यदि बिना किसी कमी के धर्म और सच्चाई से न्याय करना चाहता है तो उसके लिए सर्वज्ञ होना आवश्यक है।

अगला विवरण नया है: ''और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं'' (आयत 12ख)। पहले यीशु को विजय का मुकुट (the *stephanos*; 14:14) पहने दिखाया गया

था, परन्तु पहली बार उसे राजमुकुट (the *diadema*) पहने दिखाया गया है। इसके अलावा उसके एक डायाडीम नहीं, बल्कि ''बहुत से'' हैं। हाकिमों के लिए एक से अधिक देश पर हुकुमत करने पर कई मुकुट पहनना आम बात थी।[10] अजगर और समुद्री पशु के भी कई मुकुट थे (12:3; 13:1), परन्तु उनका शासन पुराना और थोड़ी देर का था। केवल मसीह को ही ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार ... दिया गया है'' (मत्ती 28:18)।

आयत 11 में यीशु को ''विश्वासयोग्य और सत्य'' कहा गया है। आयत 12 दूसरा पदनाम देती है: ''और उसका एक नाम लिखा है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता'' (आयत 12ग)।[12] प्राचीन जगत में नाम से व्यक्ति के स्वभाव का पता चल जाता था कि वह कैसा व्यक्ति है और कौन है। इसलिए जे.डब्ल्यू. राबर्ट्स शायद सही था, जब उसने यीशु के इस गुप्त नाम को ''उसके होने और स्वभाव का अन्तिम रहस्य'' कहा।[13] यीशु के बारे में जो भी जानने वाली बात है, हमें उस सब का पता नहीं चल सकता, विशेषकर जब तक हम शरीर में हैं।

फिर हमें बताया जाता है कि यीशु ''लोहू से छिड़का हुआ[14] वस्त्र पहिने है'' (आयत 13क)। इसका अर्थ शहीदों का लहू हो सकता है, जिनका यीशु पलटा ले रहा था (6:10; 16:6; 17:6; 18:24; 19:2)। यह यीशु के अपने लहू को कहा गया हो सकता है, जिसके द्वारा जीत पाई जाएगी (1:5; 5:9; 7:14; 12:11)।[15] परन्तु यह रूपक यशायाह 63 से लिया गया लगता है, जिसमें परमेश्वर को इस्राएलियों का पलटा लेने के लिए लौटते दिखाया गया है। भविष्यवक्ता ने प्रभु से पूछा, ''तेरा पहिरावा क्यों लाल है? और क्या कारण है कि तेरे वस्त्र हौद में दाख रौंदने वाले के समान हैं?'' (यशायाह 63:2)। उत्तर मिला:

> मैंने तो अकेले ही हौद में दाखे रौंदी हैं और देश के लोगों मे से किसी ने मेरा साथ नहीं दिया। हां, मैंने अपने क्रोध में आकर उन्हें रौंदा और जलकर उन्हें लताड़ा; *उनके लहू के छींटे मेरे वस्त्रों पर पड़े हैं,* इससे मेरा सारा पहरावा धब्बेदार हो गया है।

इससे यह संकेत मिल सकता है कि यीशु के वस्त्रों पर उसके शत्रुओं का लहू है। प्रकाशिवाक्य 19 अगली दो आयतों तक दाख रौंदने का उल्लेख नहीं करता, परन्तु वर्तमानकाल (निरन्तर क्रिया) का इस्तेमाल अन्त तक हुआ है: ''वह धर्म के साथ न्याय [निरन्तर न्याय करता है] और लड़ाई करता [निरन्तर लड़ाई करता] है'' (आयत 11), और ''वह सर्वशक्तिामान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा [निरन्तर रौंदता है]'' (आयत 15घ)।[16] यह नया रंगरूट नहीं था, जो श्वेत घोड़े पर आगे बढ़ रहा था, बल्कि युद्ध का मझा हुआ एक अनुभवी सवार था। लहू से सना उसका पहरावा पिछली लड़ाइयों और पिछली विजयों की गवाही दे रहा था।

उसके बाद हम पढ़ते हैं कि ''उसका नाम परमेश्वर का वचन है'' (आयत 13ख)। ''वचन'' यूनानी भाषा के शब्द *लोगोस* का अनुवाद है। यीशु परमेश्वर के वचन का

मानवीय रूप है यानी वह जो कुछ परमेश्वर है, उस सबका सिद्ध और सम्पूर्ण प्रकाशन है (यूहन्ना 14:9)। यूहन्ना के लेखों के यीशु के लिए "वचन" का इस्तेमाल अधिक हुआ है; वास्तव में यह प्रेरित नये नियम का एकमात्र लेखक है, जिसने उसके लिए इस शब्द का इस्तेमाला किया (यूहन्ना 1:1, 14; 1 यूहन्ना 1:1)।[17]

आयत 14 यह बताते हुए कि यीशु एक सेना की अगुआई कर रहा है, दृश्य को विस्तार देती है: "और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे हैं।" कई लोग यह कल्पना करते हैं कि यह सेना मसीही की दुल्हन (कलीसिया, अर्थात मसीही लोग) है। क्योंकि कुछ आयतें पहले दुल्हन को "शुद्ध और चमकदार महीन मलमल" (आयत 8) से बना वस्त्र दिया गया था। यह सत्य है कि यह वस्त्र मुख्यतया वही है, परन्तु सम्भवतया यह दरबार था (देखें 4:4)। यह अधिक सम्भावित है कि "स्वर्ग की सेना ... शुद्ध मलमल पहने हुए" परमेश्वर के स्वर्गदूत थे। पूरे धर्मशास्त्र में स्वर्गदूतों को परमेश्वर की स्वर्गीय "सेना" के रूप में दिखाया गया है (देखें यहोशू 5:14 15; 1 राजा 22:19; 1 इतिहास 12:22; दानिय्येल 7:10; मत्ती 26:53)। यीशु को स्पष्टतया अपने पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आते चित्रित किया गया है (मत्ती 25:31; मरकुस 8:38; लूका 9:26; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7)।

एलबर्टस पीटर्स ने कहा, "यह एक ऐसा विचार है, जो पवित्र शास्त्र से बाहर है, मसीही लोगों के स्वर्गीय विश्राम प्राप्त कर लेने के बाद, बुराई के विरुद्ध फिर से युद्ध करने के लिए निकलना।"[19] बर्टन काफ़मैन ने इस टिप्पणी में थोड़ा सा मज़ाक जोड़ दिया है: "भेड़ियों के विरुद्ध विनाश के अभियान में प्रभु ने अपनी भेड़ों को कभी संगठित नहीं दिखाया!"[20]

परन्तु इस सेना में पवित्र लोग हों या स्वर्गदूत इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वचन में से देखें और आप पाएंगे कि सेना को कभी भी यीशु के पीछे चलने के अलावा और कुछ करते नहीं दिखाया गया। लियोन मौरिस ने कहा है, "[यीशु] जातियों को सेनाओं से नहीं, बल्कि वचन से मारता है।... सेनाएं वचन के परदे के पीछे का भाग होने के अलावा और कोई योगदान नहीं देतीं। वे पीछे लगे डिब्बे तो हो सकते हैं, परन्तु वह उन पर निर्भर नहीं है।"[21]

आयत 15 स्पष्ट कर देती है कि अपने शत्रुओं को अधीन करने वाला *यीशु* ही है: "और जाति जाति को मारने के लिए उसके मुंह से एक चोखी तलावार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिामान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा।" मूल धर्मशास्त्र में, बल अन्तिम दो सर्वनामों पर दिया गया है।[22] वचन दावा करता है कि "*वह* उन पर लोह की छड़ी से राज करेगा" और "*वह* परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट से की मदिरा के कुण्ड में दाख को रौंदता है।"

आयत 15 का संकेत प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पहले इस्तेमाल किया गया है।[23] पवित्र आत्मा ने यह ज़ोर देने के लिए कि यीशु न्याय करने, दण्ड देने और दुष्टों को नष्ट करने के लिए आ रहा है, एक के बाद आकृति का ढेर लगा दिया। जॉर्ज लैड ने लिखा है:

कुछ टीकाकारों का मानना है कि मसीह का यह चित्रण शेष नये नियम में मिलने वाले अनुग्रहकारी और दयालु मसीह के चित्रण से मेल नहीं खाता। यह बिल्कुल सच नहीं है क्योंकि नये नियम में हर जगह न्याय के बीच में से विजय का तत्व मसीह के पूर्ण कार्य के पहलू से अलग नहीं किया जा सकता। (देखें मत्ती 13:41-42; 25:41; रोमियों 2:5; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7; 2:8.)[24]

आयत 16 से दृश्य चरम को पहुंचता है: ''और उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है, **राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।**'' मूसा ने इस्राएलियों को बताया था कि ''तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वही ईश्वरों का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु है'' (व्यवस्थाविवरण 10:17)। नबूकदनेस्सर ने माना था कि दानिय्येल का परमेश्वर ''सब ईश्वरों का ईश्वर, राजाओं का राजा'' है (दानिय्येल 2:47)। पौलुस ने परमेश्वर को ''राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु'' कहा था (1 तीमुथियुस 6:15)। प्रकाशितवाक्य में यह ईश्श्वरीय नाम यीशु को दिया गया है।[25] पहले अध्याय 17 में हमने पढ़ा था, ''ये मेम्ने से लड़ेंगे, और मेम्ना उस पर जय पाएगा; क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु, और राजाओं का राजा है: और जो बुलाए हुए, और चुने हुए, और विश्वासी उसके साथ हैं, वे भी जय पाएंगे'' (17:14)। अब इस दर्शन में यह पवित्र पदनाम लिखा गया था, ''और उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है, **राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु**।''

नाम ऐसी प्रमुख जगह पर था, जहां से इसे स्पष्ट देखा जा सकता था और हर कोई पहचान सकता था।[26] इसने लोगों के दावों का खण्डन किया कि सम्राट को ''राजाओं आ राजा और प्रभुओं का प्रभु'' कहा गया हो सकता है, परन्तु वह था नहीं। नाम से यीशु की श्रेष्ठता का भी दावा किया गया कि वही अकेला राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। कई ईश्वर या प्रभु हैं (1 कुरिन्थियों 8:5), परन्तु केवल एक है, जो सबका प्रभु कहा (इफिसियों 4:5)। हाकिम कई हैं, परन्तु सबके ऊपर राजा केवल एक ही है!

उसकी विजय सुनिश्चित है (19:17, 18)[27]

आयत 17 में फोकस थोड़ी देर के लिए यीशु से हटकर ''सूर्य पर खड़े एक स्वर्गदूत[28]'' की ओर चला जाता है (आयत 17क) जहां से उसे देखा जा सकता था।[29] दूत ने ''बड़े शब्द से पुकारा'' जिससे ''आकाश के बीच में से उड़ने वाले सब पक्षियों'' को सुनाई दे सके (आयत 17ख)। ''आकाश के बीच'' उड़ने वाले पक्षी बड़े मज़बूत पंखों वाले होते हैं, जिनमें से कई मांसखोर होते हैं। वे भोजन की तालाश में पृथ्वी के ऊपर मंडराते हैं।

स्वर्गदूत के पास मांस खाने वालों के लिए अच्छी खबर थी कि ताजा भरपूर खाना उन्हें मिलने वाला था। उसने पुकारा:

> आओ, परमेश्वर की बड़ी बियारी के लिए इकट्ठे हो जाओ। जिस से तुम राजाओं का मांस[30], और सरदारों का मांस, और घोड़ों का[31], और उन के सवारों का मांस, और क्या स्वतंत्र, क्या दास, क्या छोटे, क्या बड़े, सब लोगों का मांस[32] खाओ (आयतें 17ग, 18)।

जैसा के अनुमान था यह दृश्य घिनौना है जिसमें रक्तरंजित युद्धभूमि में लाशों का ढेर पड़ा है, पक्षी मुर्दों के मांस को नोच रहे हैं। हमें यीशु की बात याद आती है कि ''जहां लोथ हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे'' (मत्ती 24:28)। हमें ''मागोग देश के गोग'' के विरुद्ध (यहेजकेल 38:2) यहेजकेल की बात भी याद आती है। इस नबी को आज्ञा दी गई थी:

> ... भांति-भांति के सब पक्षियों और सब वनपशुओं को आज्ञा दे, इकट्ठे होकर आओ, मेरे इस बड़े यज्ञ में ... हर एक दिशा से इकट्ठे हो कि तुम मांस खाओ और लोहू पीओ। तुम ... पृथ्वी के प्रधानों का लोहू पीओगे ... तुम मेरी मेज़ पर घोड़ों, सवारों, शूरवीरों, और सब प्रकार के योद्धाओं से तृप्त होंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है (यहेजकेल 39:17-20)।

प्रकाशितवाक्य 19:17, 18 के अनोखे भोज को ''परमेश्वर का बड़ा भोज'' कहा जाता है, क्योंकि यह उसकी ओर से दिया गया था। इस ''भोज'' अलग-अलग तरह के लोग थे, जिसमें राजा और अन्य शक्तिशाली लोग, सेनापति[33] और सिपाही ''क्या स्वतन्त्र क्या दास, क्या छोटे क्या बड़े'' सब परमेश्वर के विरुद्ध बगावत करने वाले लोग थे। राजाओं में इतनी शक्ति नहीं थी, शूरवीरों का इतना प्रभाव नहीं था, या सेनापतियों के पास दण्ड से बच पाने के लिए पर्याप्त सिपाही नहीं थे। प्रभु के सामने सब नि:सहाय थे।

विचार करने पर अनुमानित दावत की विभिन्नता उतनी बड़ी नहीं थी जितनी पहले लगती है। मुझे फोर्ट वर्थ, टैक्सस का एक फास्ट-फूड रेस्टोरेंट ध्यान में आता है, जिसमें बहुत बड़ा मेन्यू दिया जाता था, परन्तु (जहां तक मैं बता सकता हूं) हर डिश में घुमा-फिराकर वही चार-पांच चीज़ें होती थीं। 19:17, 18 वाले हारे हुओं के पास राजा, सेनापति, शूरवीर और योद्धा हो सकते हैं, परन्तु मुर्दा खोर पक्षियों को धन या शक्ति या प्रतिष्ठा से कुछ लेना देना नहीं था। कप्तान हों या आम व्यक्ति, ताकतवर घोड़े की सवारी करने वाला सेनापति हो या उसके साथ चलने वाला उसका नौकर दावत उड़ाने वाले पक्षियों के लिए हर मनुष्य के मांस का स्वाद एक जैसा था।[34] घमण्डी और अभिमानी को ऐसे ही नीचा किया जाएगा (नीतिवचन 16:18)।[35]

स्पष्टतया ''मेमने के विवाह के भोज'' (आयत 9) और ''परमेश्वर के बड़े भोज'' में अन्तर किया जाना चाहिए।

> उन्नीसवां अध्याय दो बिल्कुल अलग-अलग दृश्यों का चित्रण करता है, इसे ऐसे रंगता है, जैसे वह एक ही कपड़े पर हों- दो भोज, ... पहला स्वर्गीय प्रकाश में नहाया हुआ है, ... दूसरा अन्धकार की छाया में है। एक के मेहमान ... श्वेत वस्त्र पहने लोगों की बड़ी भीड़ है; दूसरे के मेहमान ... सड़े मांस वाले जीव और मुर्दा खोर पक्षी हैं। एक में तो स्वर्गीय संगीत मण्डली द्वारा गया जाने वाला हैलेलुय्याह का संगीत है ... दूसरी में कोई संगीत नहीं है, कोई गाना नहीं केवल हड्डियों [के] किरचने [की आवाज़] है।[36]

कोई आपत्ति कर सकता है, ''यह तो बहुत घृणाजनक है!'' हां, परन्तु उतना घृणाजनक नहीं जितना नरक है। पवित्र आत्मा एक भयानक तस्वीर बनाता है, परन्तु याद रखें कि ''यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है'' (नीतिवचन 9:10)। पसन्द आपकी है: आप यीशु के पीछे चलकर मेमने के विवाह के भोज में आमन्त्रित हो सकते हैं या प्रभु का विरोध करके परमेश्वर के बड़े भोज में खाने के बीच परोसी गई थाली।

इस बात पर विशेष ध्यान दे कि ''युद्ध'' से निकलने वाले परिणाम पर कभी संदेह नहीं था। पक्षियों को शत्रु के लड़ाई में भाग लेने से पहले ही शत्रु की लाशों की दावत के लिए बुला लिया गया था। यीशु की विजय सुनिश्चित है।

उसके शत्रुओं का अन्त होना ही है (19:19-21)

अन्त में हम वचन के मुख्य उद्देश्य अर्थात प्रभु के दो शत्रुओं के पतन के चित्रण पर आते हैं। यूहन्ना ने लिखा, ''फिर मैंने उस पशु और पृथ्वी के राजाओं और उनकी सेनाओं को उस घोड़े के सवार, और उसकी सेना से लड़ने के लिए इकट्ठे देखा'' (आयत 19)। ''पशु'' 13:1, 2 में बताया गया भयानक समुद्री पशु है। (13:4, 7, 8 भी देखें।)पशु और उसका सहकर्मी दोनों (पृथ्वी का पशु , जिसे ''झूठा भविष्यवक्ता'' भी कहा गया है[37] [16:13]) नष्ट होने थे (19:20); परन्तु आयत 19 में केवल पशु का उल्लेख है क्योंकि वह अगुआ था। झूठे भविष्यवक्ता का काम उसके अनुयायियों की सूची में था (13:12)।

यूनानी धर्मशास्त्र मूल में कहता है कि पशु और उसके शत्रु ''उसके साथ [जो] घोड़े पर बैठा था लड़ने के लिए इकट्ठे हुए।'' जैसा कि पिछले पाठ में ध्यान दिलाया गया था कि यह ''अरमगिद्दोन की लड़ाई'' के नाम से प्रसिद्ध वही लड़ाई है जिसका उल्लेख अध्याय में किया जाएगा (20:8)।[38] यह जोर देने के लिए कि यह वही लड़ाई है जिसका उल्लेख 16:13-21 में है मैंने ब्रायन वाट्स से उसी मूल लड़ाई के दृश्य का इस्तेमाल करते हुए इस अध्याया में से उसमें विशेष विवरण जोड़न के लिए कहा: श्वेत घोड़े का सवार, अगुओं के रूप में दो पशु और अपनी दावत की प्रतीक्षा कर रहे पक्षी। (''युद्ध'' का दूसरा वृत्तांत का चित्र देख।)

एक बार फिर ध्यान दें कि ''मुकाबले के लिए मंच तैयार होने के बावजूद ... *लड़ाई कहीं कोई नहीं है।*''[39] डोनल्ड गुथरी ने ध्यान दिलाया है, ''किसी प्रकार की किसी लड़ाई का वर्णन नहीं है ... योद्धा राजा सैनिक शक्ति से नहीं जीतता बल्कि अपने मुंह से निकलने वाली तलवार से जीतता है। उसकी विनाशकारी आज्ञा ही काफी है।''[40] बर्टन काफमैन ने लिखा है:

> यहां किसी प्रकार की कोई ''लड़ाई'' नहीं हुई। अरमगिद्दोन की कथित लड़ाई जैसा कि आमतौर पर माना जाता है, मनुष्य की कल्पना के अलावा और कुछ नहीं है। मसीह को किसी सेना की आवश्यकता नहीं है चाहे वह स्वर्गदूतों की हो या किसी और की। अंतरिक्ष में सूर्यों को ज़ोर से फैंक देने वाला उसका वचन समय आने पर

उसकी इच्छा को लागू करेगा।[41]

अधिकतर लड़ाकों की तरह पशु अपने से शारीरिक रूप से अपने से कमज़ोर लोगों को धमकाने से लगा कि वह शक्तिशाली है (13:7, 15), परन्तु अपने से बड़ी शक्ति का सामना करने पर वह चूर-चूर हो गया। उसके घमण्डपूर्ण और परमेश्वर की निन्दा करने वाले दावे (13:5, 6) मेमने की शक्ति के सामने खोखले थे।

> और वह पशु और उसके साथ वह झूठा भविष्यवक्ता पकड़ा गया, जिसने उसके साम्हने ऐसे चिन्ह दिखाए थे, जिनके द्वारा उसने उनको भरमाया, जिन्होंने उस पुश की छाप ली थी, और जो उसकी मूरत की पूजा करते थे,[42] ये दोनों जीते जी उस आग की झील में जो गन्धक से जलती है, डाले गए[43] (आयत 20)। (पशु और झूठा भविष्यवक्ता आग की झील में डाले गएका चित्र देखें।)

आग की उस झील में ''वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे'' (20:10)।

''झील ... जो गन्धक से जलती है'' का उल्लेख यहां पहली बार हुआ है परन्तु यह अन्तिम बार नहीं होगा (20:10, 14, 15; 21:8)।[44] प्रकाशिवाक्य में ''नरक'' (*यू.: gehenna*) का इस्तेमाल नहीं है,[45] परन्तु स्पष्ट रूप से पवित्र आत्मा के मन में दुष्टों का अन्तिम निवास यही था। ''सदा रहने वाली आग'' ''शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई'' है (मत्ती 25:41), और उन सबके लिए जो यीशु के पीछे चलते हुए वहीं खत्म करते हैं।

लिखे जाने के समय संकेत का इस्तेमाल यहां रोमी साम्राज्य, इसकी एजेंसियों और इसके साथियों का अन्तिम गिरना था, जो भविष्यवाणी ही थी। परन्तु निश्चिय ही हर कोई मानेगा कि इस रूपक में ''ऐसी *सब* शक्तियों के अन्त'' का चित्रण है, ''जो कभी परमेश्वर और उसके राज्य के विरुद्ध लड़ने को उठ सकती हैं।''[46] वह दिन आएगा जब ''दुष्ट अधोलोक में लौट जाएंगे, तथा वे सब जातियां भी जा परमेश्वर को भूल जाती है'' (भजन संहिता 9:17)।

इस वचन का सबसे चौकाने वाला पहलू वह आकस्मिकता है, जिससे दोनों शत्रुओं को भेजा गया था। इसकी झलक विवरण के संक्षिप्त होने में मिलती है: ''यह बताने के लिए कि पशु और झूठा भविष्यवक्ता ... कैसे पकड़े गए और जीवित गन्धक की आग में डाल दिए गए, एक ही आयत काफी है।''[47] हमने पहले ही बड़े बाबुल को गिरते देखा है (अध्याय 17 और 18)। सिर (रोम नगर) के नष्ट होने पर शरीर (रोमी साम्राज्य) जीवित नहीं रह सकता। आसान दिखने वाली विजय याद दिलाती है कि बड़े से बड़ा शत्रु भी प्रभु क सामने छोटे बच्चे की तरह नि:सहाय है। दोनों पशुओं को ''उन्हें थोड़ा दिन'' दिया गया था, परन्तु यहां हम उन्हें उनकी सही जगहों पर डाले जाते देखते हैं।[48]

हमारे पाठ की अन्तिम आयत दो उद्देश्यों को पूरा करती है: यह पशु और झूठे भविष्यवक्ता द्वारा भरमाए गए लोगों का अन्त बताती है और यह पक्षियों से की गई स्वर्गदूत

की प्रतिज्ञा को पूरा करती है: ''और शेष लोग उस घोड़े के सवार की तलवार से जो उसके मुंह से निकलती थी, मार डाले गए; और सब पक्षी उनके मांस से तृप्त हो गए'' (आयत 21)।[49] जैसा कि वारेन वियर्सबे ने कहा, प्रभु के शत्रु ''लड़ाई के रूप में अरमगिद्दोन को देख'' सकते हैं, ''परन्तु परमेश्वर के लिए यह केवल आकाश के पक्षियों के लिए 'भोज' ही होगा।''[50] इसीलिए ''परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने की मूर्खता और व्यर्थता'' पर जोर दिया गया है।[51]

सारांश

आप प्रकाशितवाक्य का अध्ययन इतनी देर से कर रहे हैं कि अब तक आपको समझ आ गई होगी कि 19:11-21 का रूपक अक्षरश: नहीं है, क्योंकि स्वर्ग में प्रभु की सेना के सफेद घोड़ों के लिए कोई अस्तबल नहीं है और न ही परमेश्वर ने दुष्टों को खा जाने को तैयार भूखे पक्षी रखे हैं। ये आयतें अपने शत्रुओं पर यहूदियों की सांकेतिक विजय हैं। परन्तु इसका कि इन वचनों को अक्षरश: न लिया जाए, अर्थ यह नहीं है कि इसे गम्भीरता से न लिया जाए। हम या तो पशु के पीछे चल सकते हैं या राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के पीछे, और सबसे गम्भीर बात यही है।

''डिस्पाइज़्ड एंड रिजेक्टेड ऑफ़ मेन'' नामक गोयट्ज़ की प्रसिद्ध पेंटिंग में यीशु को व्यस्त राजमार्ग के बीच में कांटों का ताज पहने दिखाया गया है:

> उसे जीवन के हर तरह और हर जगह के लोगों ने घेरा हुआ है: मजदूर के पास गैंती है, घुड़सवार के पास चाबुक है, मां अपने बच्चे के साथ है, नवजन्मा लड़का ताजा सनसनी के लिए पुकार रहा है। परन्तु उस पेंटिंग को नज़र से देखें तो आप पाएंगे कि सब नज़रें मसीह *से* दूर हटी हुई हैं। कोई भी उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। संसार सचमुच ऐसा ही करता है।[52]

यीशु को अब ठुकराया जा सकता है (यूहन्ना 12:48), परन्तु उसे सदा के लिए ठुकराया नहीं जाएगा। एक दिन वह राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में तेज से भरकर आ रहा है! जो आज उसे ठुकराते हैं उन्हें वह उस समय ठुकराएगा। जो आज उसे स्वीकार करते हैं वह तब उन्हें स्वीकार करेगा। इससे गम्भीर बात और क्या हो सकती है![53]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

किसी ने पवित्र शास्त्र के इस भाग को ''प्रदर्शन की परीक्षा'' नाम दिया है। जी. बी. केयर्ड ने इसे ''विनाश करने वाले का विनाश'' नाम दिया है।

19:11-21 का एक ढंग इस प्रकार है: (1) राजा के नाम, (2) राजा का काम, (3) राजा की विजय।[54] एक और ढंग है (1) महान अगुआ, (2) बड़ा भोज, (3) बड़ी विजय।[55]

पूरे पाठ को ''दो भोजों'' के अन्तर के आधार पर बनाया जा सकता है। आप वचन

में यीशु के चार नामों/शीर्षकों पर भी प्रचार कर सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]आवश्यक नहीं कि इसका अर्थ यह हो कि वे अलग-अलग समयों में पराजित हुए थे। यह तो चरम तक बनाने का अपोकलिप्टिक साधन है। अध्याय 20 में अजगर की अन्तिम पराजय ही चरम है। [2]जेम्स एम. एफर्ड, *रैवलेशन फ़ॉर टुडे* (नैशविल्ले: अबिंगडन प्रैस, 1989), 109. [3]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन*, अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 177. [4]जी. आर. बिसले-मुर्रे, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू सैंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1974), 277. [5]अध्याय 6 वाले श्वेत घोड़े के सवार या किसी शाही रूप के बारे में टीकाकार लगभग समान रूप से बंटे हुए हैं। (*टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पाठ "गरजतीं टापें" में इस घुड़सवार पर चर्चा देखें।) परन्तु 19:11-21 के संदेश के सम्बन्ध में जैसा कि एडवर्ड मायर्स ने कहा है, "यहां वाले सवार और अध्याय 6 वाले सवार में समानता होने [या होने] का महत्व नहीं" (*ऑफ़्टर दीज़ थिंग्स आई सॉ: ए स्टडी ऑफ़ रैवलेशन* [जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1997], 309)। [6]बार्कले, 178. प्रभु की सेना भी श्वेत घोड़ों पर थी (आयत 14) जोकि विजय का संकेत है। [7]1:5 में उसे "विश्वास योग्य गवाह" कहा गया था। *टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पाठ "कब तक, हे प्रभु" में 1:5 पर और "प्रकाशिवाक्य, 1" के "कलीसिया, जिसने कर लिया था, 1" और "कलीसिया जिसने कर लिया था, 1" पाठों में 3:14 पर नोट्स देखें। [8]पहाड़ की चोटियों के पहले चित्र के लिए *टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पाठ "परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम विजयी हुए!" देखें। [9]यही शब्द 2:18 में मिलता है। *टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" में "मनुष्य के पुत्र सा कोई" में 1:14 पर नोट्स और "कलीसिया, जहां की सदस्या इज़ेबेल थी" में 2:18 पर नोट्स देखें। [10]संग्रहालयों में मैंने एक के बीच में एक रखे गए कई मुकुट देखे हैं, जो देखने में एक ही मुकुट लगता है। इस बात पर ज़ोर देने के लिए कि मसीह के *कई* मुकुट थे, कलाकार ब्रायन वाट्स से मैंने यीशु के सिर के आस-पास कई मुकुट बनाने के लिए कहा।

[11]"उस पर" अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है (देखें KJV); हमें यह नहीं बताया गया कि यह नाम कहां लिखा गया था। [12]कुछ टीकाकार इस पर अनुमान लगाने में कि नाम का अर्थ क्या है कागज़ खराब करते हैं जबकि वचन स्पष्ट कहता है कि यीशु के अलावा इस नाम को "कोई नहीं जानता।" [13]जे. डब्ल्यू राबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 164. [14]कुछ अनुवादों में "डुबोया हुआ" है। हस्तलिपि का प्रमाण यहां स्पष्ट नहीं है। [15]वचन के मूल संदेश से इस बात का कोई सम्बन्ध नहीं है कि लहू किसका था, सो मुझे यीशु का लहू मानने में कोई आपत्ति नहीं है; परन्तु यीशु के शत्रुओं का लहू मानना संदर्भ और पुराने नियम की पृष्ठ भूमि से अधिक मेल खाता है। [16]अपोकलिप्टिक साहित्य में कुछ विवरण का *पूर्वानुमान* लगाना नई बात नहीं है कि बाद तक इसका उल्लेख नहीं हुआ। [17]यह एक और संकेत है कि प्रेरित यूहन्ना ही वह यूहन्ना है जिसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी। [18]यह तर्कसंगत है कि "*पवित्र* स्वर्गदूतों" (मरकुस 8:38) को सफेद/चमकदार कपड़े पहने दिखाया गया है। यीशु की कब्र पर दोनों स्वर्गदूतों ने "झलकते वस्त्र पहने हुए" थे (लूका 24:4)। [19]अल्बर्टस पियटर्स, *स्टडी इन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1954), 204. [20]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 451.

[21]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैड रैपिड्स, मिशिगन:

विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 225. [22]मूल धर्मशास्त्र में इस व्याकरण का इस्तेमाल नहीं है: यूनानी क्रियाओं में सर्वनाम (पुरुषवाचक, स्त्रीवाचक या अकर्मक) स्वत: जुड़ जाता है। ''रौंदेगा'' के लिए यूनानी शब्द (*patei*) के अनुवाद का अक्षरश: अर्थ है ''वह रौंदता है।'' क्रिया से पहले यूनानी सर्वनाम *जोड़े जाने* पर यह सर्वनाम पर बल देता है। यहां यूनानी में *autos* (''वह'' का एक रूप) *patei* है; इस प्रकार वाक्यांश संकेत देता है कि ''*वह* रौंदता है।'' [23]उसके मुंह से निकलने वाली तलवार के सम्बन्ध में *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' में 1:16 पर नोट्स देखें और उसी पुस्तक के ''हृदय की समस्या वाली कलीसिया'' पाठ में 2:12 पर नोट्स देखें। राजदण्ड के सम्बन्ध में, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे की पुस्तक* ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''कलीसिया जहां की सदस्या इज़ेबेल थी'' में 2:26, 27 के साथ *ट्रुथ फ़ॉर टुडे की पुस्तक* ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''अपने शत्रु को जानें'' में 12:5 पर टिप्पणियां देखें। दाख के सम्बन्ध में *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''कटनी का समय!'' में 14:19, 20 पर टिप्पणियां देखें। [24]जॉर्ज एल्डन लैड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 252. [25]यह तथ्य कि आमतौर पर परमेश्वर के लिए इस्तेमाल होने वाली शब्दावली यीशु पर लागू होती है एक और सबूत है कि यीशु स्वयं ईश्वरीय है। [26]सवार के जांघ का क्षेत्र साफ दिखाई देता है परन्तु नाम कहां लिखा है यह पता नहीं चलता। कइयों का मानना है कि यह नाम जांघ को ढकने वाले वस्त्र के भाग पर था। अन्य यह ध्यान दिलाते हैं कि यूनानी में ''उसके वस्त्र पर *और* उसकी जांघ पर'' है। (इस कारण, ब्रायन वाट्स के चित्र में आपको जांघ के ऊपर के वस्त्र और पूंछ के वस्त्र दोनों पर चिह्न मिलेंगे।) अन्यों का तो यह भी मानना है कि उसके वस्त्र के किसी भाग या जांघ के सामान्य क्षेत्रमें हथियार रखने की जगह अर्थात उसकी चौड़ी पेटी (कमरबंद) पर, उसकी तलवार की मूठ पर या कहीं और नाम लिखा है। ज़ोर विशेष जगह पर नहीं बल्कि इस बात पर है कि उसका नाम स्पष्ट था और इसे आसानी से देखा जा सकता था। [27]इस पाठ का दूसरा और तीसरा मुख्य प्वाइंट माइकल विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 184-85 से लिया गया। [28]यूनानी में मूलत: ''एक स्वर्गदूत'' है। [29]सूर्य का प्रतीक स्वर्गदूत के संदेश की महिमा और/या महत्व का (प्रकाशितवाक्य 1:12; 10:1; 2:1) या इस तथ्य का संकेत हो सकता है कि वह प्रकाश (ज्योति) के स्रोत से आया। (देखें 1 तीमुथियुस 6:16; 1 पतरस 2:9; 1 यूहन्ना 1:5. *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''तूफ़ान के बीच की शांति'' में प्रकाशितवाक्य 7:2 पर टिप्पणियां भी देखें।) [30]मूल धर्मशास्त्र में इस पूरी आयत में अनुवादित यूनानी शबद ''मांस'' से पहले निश्चय उपपद (''the'') नहीं मिलता। इसके अलावा अनुवादित यूनानी शबद ''मांस'' बहुवचन में है। (मूलत:, ''flesh*es*'')। इस शब्द का अनुवाद ''देहें'' या ''लाशें'' हो सकता है।

[31]''घोड़ों का मांस'' जुड़ना बेतुका लगता है, परन्तु सम्भवतया चित्र को पूरा करने के आगे इसका कोई महत्व नहीं है। [32]यूनानी अुनवादित ''सब लोगों'' संदर्भ से पता चल जाना चाहिए कि पशु के साथ अपने आपको मिला लेने वाले ''सब लोगों'' को कहा गया है। स्पष्टतया मसीही लोगों को छूट दी जानी थी। [33]अनुवादित यूनानी शब्द ''सरदारों'' (''कप्तानों''; KJV) एक हज़ार पुरुषों के ऊपर सैनिक अगुओं को कहा गया है। [34]यह और पिछला वाक्य जेम्स डी. स्ट्रैस, *द सियर, द सेवियर, एण्ड द सेवड,* संशो. संस्क., बाइबल स्टडी टैक्सट बुक सीरीज़ (जौप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1979), 260 से लिए गए थे। [35]इस दृश्य का एक और अपमानजनक पहलू है कि लाशें लड़ाई के मैदान में बिना दफ़न किए पड़ी थीं। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशिवाक्य, 2'' के पाठ ''क्या आप मरने को तैयार हैं'' में दो गवाहों की मृत्यु पर टिप्पणियां देखें। [36]अल्बर्ट एच. बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्रॉम रैवलेशन: टाइमली मैसेज़ेस फ़ॉर ट्रबल्ड हार्ट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 105. [37]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशिवाक्य, 2'' के पाठ ''वह बड़ा भरमाने वाला'' में 13:11-17 पर नोट्स देखें। [38]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशिवाक्य, 2'' में ''युद्ध, जो न कभी था और न होगा'' पाठ देखें। और प्रमाण के लिए अध्याय 19 और 20 वाली लड़ाइयां एक ही हैं, ध्यान दें कि 19:17, 18 में ''परमेश्वर के बड़े भोज'' का नमूना यहेजकेल 38 और 39 में मिलता है

जो वही पाठ हैं जिनमें 20:8 के लिए ''गोग और मागोग'' नामों का आधार है।[39]बिसले-मुर्रे, 278. [40]डोनाल्ड गुथरे, *द रेलेवेंस ऑफ़ जॉन'स अपोकलिप्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 102.

[41]कॉफ़मैन, 451. [42]झूठे भविष्यवक्ता के इस विवरण की तुलना 13:11-17 के पृथ्वी में से निकलने वाले पशु से करें।[43]यह शिक्षा देने वाले कि दोनों पशु दो विशिष्ट व्यक्तियों को दर्शाते हैं, ''जीते जी डाले गए'' वाक्यांश का इस्तेमाल यह साबित करने की कोशिश में करते हैं कि वचन अवश्य दो लोगों की बात कर रहा है। परन्तु अपोकलिप्टिक भाषा के संदर्भ में वाक्यांश का केवल यह अर्थ है कि अपने विनाश के समय तक, दोनों पशु प्रभु का विरोध करने में सक्रिय थे।[44]हमारे पास आग/जलने (17:16; 18:8, 9, 18) और गन्धक (9:17) के हवाले हैं, ''आग की झील'' पर चर्चा के लिए इस पुस्तक में आगे ''बुराई का अन्त'' और ''न्याय की पांच बातें जो आपको पता होनी आवश्यक हैं'' में 20:10, 14, 15 पर नोट्स और *''गेहन्ना''* पर लेख देखें। [45]KJV मेंं यूनानी शब्द *hades* का अनुवाद करने के लिए प्रकाशितवाक्य में चार बार ''नरक'' शब्द का इस्तेमाल किया गया है; परन्तु जैसा कि हमने पहले चर्चा की है *हेडिस* मृतकों के अदृश्य संसार को कहा गया है न कि अनन्त दण्ड के स्थान को (नरक; यू.: *गेहन्ना*)।[46]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुकस हाउस, 1979), 388. [47]मार्टिन एच. फ़्रैंज़मैन, *द रैवलेशन टू जॉन* (सेंट लुईस, मिज़ोरी: कॉन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1976), 128. [48]मौरिस 225-26 से लिया गया। [49]कोई पूछ सकता है, ''इन्हें आग की झील में अभी क्यों नहीं डाला गया?'' डाला जाएगा (20:15) परन्तु चरम तक नहीं, शैतान को झील में डाले जाने के समय (20:10)।[50]वारेन डब्ल्यू .वियर्सबे, *द बाइबल एक्पोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 610.

[51]बिसले-मुर्रे, 283. [52]विलियम हैंड्रिक्सन, *लैक्चर्स ऑन द लास्ट थिंग्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1951), 63. [53]यदि आप इसका इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो सुनने वालों को प्रभु में भरोसा रखते हुए उसकी आज्ञा मानने के लिए प्रोत्साहित करें (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:37, 38)।[54] मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 96-98 से लिया गया। [55]जॉन स्टेसी, *प्रीचिंग थ्रू रैवलेशन* (विनोना, मिसिसिप्पी: जे. सी. चोट पब्लिकेशंस, 1983), 169-71 से लिया गया।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. पिछले पाठ के वचन से हमें दूल्हे के रूप में मसीह के प्रकट होने की तैयारी करवाई गई। इसके बजाय और वह कैसे प्रकट होता है?
2. 19:11-21 ध्यान से पढ़ें। आपको इन आयतों से कुल प्रभाव क्या मिलता है?
3. प्रकाशितवाक्य में दिखाए गए प्रभु के चार शत्रुओं के क्रम पर और उनके द्वारा छोड़े गए दर्शन के क्रम पर विचार करें।
4. 19:11-21 का उद्देश्य दोनों पशुओं के गिरने को दिखाना है, परन्तु जोर किस पर दिया गया है?
5. 11, 12, 13 और 16 आयतों में दिए गए यीशु के चार नामों/शीर्षकों पर चर्चा करें। ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' वाक्यांश पर विशेष ध्यान दें। हर नाम/ शीर्षक किस प्रकार यीशु को हमारे समझने में योगदान देता है?
6. यीशु के चित्रण के अन्य विवरणों पर चर्चा करें। इनमें से कौन से विवरण इस पुस्तक में पहले मिलते हैं? नया विवरण कौन सा है?

7. आपको क्या लगता है कि आयत 14 वाली सेना में पवित्र लोग थे या स्वर्गदूत? क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?
8. 19:9 वाले भोज और 19:17 वाले भोज में अन्तर बताएं।
9. अध्याय 13 का अध्ययन करते हुए जो कुछ हमने दोनों पशुओं के बारे में कहा था उसकी समीक्षा करें।
10. प्रभु और उसकी सेना से लड़ने के लिए पशु और उसकी सेनाएं इकट्ठी हो गईं, परन्तु क्या वचन उस ''लड़ाई'' का वर्णन वैसे ही करता है जैसे हम आमतौरपर इस शब्द का इस्तेमाल करते हैं?
11. पशु और झूठे भविष्यवक्ता के गिरने के वर्णन के लिए वचन में कितनी जगह दी गई है? आपको क्यों लगता है कि यह विवरण बहुत संक्षिप्त है?
12. ''राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु'' के रूप में यीशु के आगे समर्पण करना क्यों आवश्यक है?

यीशु, जो विश्वास योग्य और सच्चा है, श्वेत घोड़े पर (19:11)

''युद्ध'' का दूसरा वृतांत का चित्र देखें। (19:19-21)

पशु और झूठा भविष्यवक्ता आग की झील में डाले गए (19:20)